कारकों के संश्लेषण पर बल दिया। रिटर ने अनेक प्रेरणादायी विचार प्रस्तुत किए। उसने दृढ़तापूर्वक कहा कि महाद्वीपों की पहचान भिन्न-भिन्न जाति एवं भिन्न-भिन्न रंगों के द्वारा होती है।

उनके अनुसार

अफ्रीका - काले लोगों का देश
यूरोप - गोरे लोगों का देश
एशिया - पीले लोगों का देश
अमरीका - लाल लोगों का देश

रिटर का मूल विषय था भौतिक भूगोल। तथा इनका मानना था कि भौतिक पर्यावरण मानव विकास के मार्ग को निश्चित करने में सक्षम है। रिटर की विचारधारा के मुख्य तत्व निम्नलिखित हैं—

(i) रिटर वातावरण निश्चयवाद को मानता था

(ii) रिटर के अनुसार किसी क्षेत्र की स्थिति, भौतिक लक्षणों, जलवायु और प्राकृतिक साधनों के सहसम्बन्धों द्वारा ही उस क्षेत्र के भौगोलिक व्यक्तित्व को समझा जा सकता है।

(iii) रिटर प्रकृति एवं मानव की अन्तः क्रिया तथा अन्तः संबंधों के अध्ययन द्वारा ईश्वरीय उद्देश्यवाद की विचारधारा को स्पष्ट करना चाहता था।

(iv) रिटर ने क्रमबद्ध विधि की जगह प्रादेशिक विधि को अपनाया परन्तु इकाई के रूप में राजनीतिक क्षेत्रों के बजाय प्राकृतिक प्रदेशों को चुना।

(v) रिटर अपने प्रादेशिक अध्ययन के द्वारा किसी क्षेत्र के क्षेत्रीय व्यक्तित्व को स्पष्ट करना चाहता था।

संकल्पना :- रिटर w.f. हिगल से प्रभावित थे। उन्होंने अनेकता में एकता के

सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। उन्होंने प्रकृति की अनेक गतिविधियों [redacted] का वर्णन किया।

रिटर ने भूगोल के अध्ययन की चार विधियाँ बताई—

(i) अनुभविक विधि
(ii) तुलनात्मक विधि
(iii) विश्लेषण व संश्लेषण विधि
(iv) मानचित्र विधि

मूल्यांकन :- रिटर एक बहुत बड़े भूगोलवेत्ता थे। उनके भूगोल के प्रति किया गया योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण था। उनके लेखों से यह सिद्ध होता है कि पृथ्वी मनुष्य के निवास के लिए बनी है। जैसे - आत्मा के लिए शरीर बना है। रिटर ने 18 वीं शताब्दी के भूगोल शास्त्रियों के बिखरे हुए असम्बद्ध विचारों को संगठित एवं संवर्द्धित किया और भूगोल का एक नवीन स्वरूप उपस्थित किया जो आज तक मान्य है।

Scanned with CamScanner